Sem-4, Paper-VIII-b लघुत्तरीय (Short-Note) (1)

गाँधीजी द्वारा प्रतिपादित बेसिक शिक्षा योजना की मुख्य विशेषताएँ

(Main Features of the Basic Education System Propounded by Gandhiji)

विदेशी शासन काल में जो शिक्षा प्रणाली भारतीयों के ऊपर थोपी गई थी वह सर्वांगीण नहीं थी एवं उपयुक्त नहीं थी। महात्मा गाँधी ने यह अनुभव किया कि यदि राजनीतिक स्वराज्य मिल भी जाय तो भी सामाजिक एवं आर्थिक स्वराज्य तब तक नहीं आ सकता, जब तक कि शिक्षा को राष्ट्रीय आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं के अनुरूप नहीं बनाया जाता। अक्टूबर 1937 में वर्धा में आयोजित 'अखिल भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन' में गाँधी जी 'बेसिक शिक्षा योजना' को प्रस्तुत किया और गाँधीजी ने बताया कि यह हमारे सम्पूर्ण जीवन के महत्वपूर्ण कार्यों में से एक है। इस सम्मेलन में देश के 80 शिक्षाविदों, एवं समाजसुधारकों को आमन्त्रित किया गया था, जिसकी अध्यक्षता स्वयं गाँधी जी ने की थी। इस सम्मेलन में बेसिक शिक्षा योजना को संस्तुति मिली जिसकी विशेषताएँ निम्नलिखित हैं -

(1) उद्योग द्वारा शिक्षा :- बेसिक शिक्षा योजना की प्रमुख विशेषता उद्योग व हस्तकला पर आधारित शिक्षा थी। इसमें हस्तकला के माध्यम से शिक्षा देने की व्यवस्था की गयी थी अर्थात किसी भी शिक्षा विषय को पढ़ाते समय यह प्रयास किया जाय कि हस्तकला को केन्द्र में रखकर शिक्षा दी जाय।

(2) समवाय पद्धति :- समवाय पद्धति में एक विषय में भिन्न-भिन्न भागों को आपस में सम्बन्ध स्थापित करके, एक विषय से दूसरे विषय का सम्बन्ध स्थापित करके तथा प्रत्येक प्रकार के ज्ञान को जीवन से सम्बन्धित करके शिक्षा देने का प्रावधान था इसी को सहसम्बन्ध विधि भी कहते हैं।

(3) स्वावलम्बन :- गाँधीजी का विचार था कि बेसिक शिक्षा स्कूलों को अपना खर्च स्वयं निकालना चाहिए अर्थात हस्तकला के माध्यम से विद्यार्थियों द्वारा बनाई गयी वस्तुओं को बेचकर विद्यालय स्वयं खर्च निकालें। स्वावलम्बन का एक अर्थ यह भी था कि बालकों को हस्तकला के माध्यम से इतना ज्ञान दिया जाय कि आगे चलकर छात्र इस हस्तकला के माध्यम से स्वरोजगार कर सकें।

(4) सभी के लिए अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा का सिद्धान्त :- उस समय अशिक्षा बहुत अधिक थी इसलिए गाँधी जी ने 07 से 14 वर्ष तक के बालकों को अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा का प्रावधान किया जिसको भारत सरकार ने 1 अप्रैल 2010 में लागू कर सकी।

(5) मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा देने का सिद्धान्त :- गाँधीजी का कहना था कि अंग्रेजी भाषा विदेशी संस्कृति की पोषक है इसलिए शिक्षा का माध्यम ~~हिन्दी~~ मातृभाषा ही होनी चाहिए। इससे तथ्यों के ज्ञान, समझ और प्रयोग में सरलता होती है।

Scanned with CamScanner

(6) मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों पर आधारित :- बेसिक शिक्षा बालकों का मनोविज्ञान व अधिगम का मनोविज्ञान पर आधारित थी। इसमें बालकों को 'करके सीखना' तथा उनके अनुभवों से सीखना इन दोनों प्राविधियों पर आधारित थी। इसमें बालकों को अपना आत्म-प्रकाशन का अवसर मिलता है। इस प्रकार इस शिक्षा में श्रम, तथा केवल सैद्धान्तिक शिक्षा का अभाव था।

(7) सामाजिक आधार :- बेसिक शिक्षा में बालकों के सामाजिक गुणों का भी विकास किया जाता है शिक्षा में पुस्तकों के अपेक्षा स्वतंत्र ध्यान पर बल दिया जाता है। हस्तकला के माध्यम से बालकों में आज्ञापालन, सहिष्णुता, सहयोग आदि गुणों का विकास किया जाता है। भारतीय समाज के उन्नति के लिए जिस प्रकार के मनुष्यों की आवश्यकता है बेसिक शिक्षा उस प्रकार के मनुष्य बनाने की दावा करती है।

(8) सांस्कृतिक आधार :- बेसिक शिक्षा भारतीय संस्कृति के आधार पर शिक्षा देने की वकालत करती है। आज ऐसे नागरिकों की आवश्यकता है जो विज्ञान को सांस्कृतिक मूल्यों के साथ जोड़ सके। बेसिक शिक्षा भारतीयता के मूल्यों पर शिक्षा देने की बात करती है।

(9) श्रम का महत्व :- ब्रिटिश शिक्षा व्यवस्था में जो शारीरिक श्रम करता था उसे हेय समझा जाने लगा था वहां लोग एक 'अंग्रेज बाबू' बनना पसंद करते थे। बेसिक शिक्षा का आधार ही श्रम पर जोर देता है।

(10) विद्यालय, घर और समाज के जीवन में सामंजस्य :- अंग्रेजी शिक्षा में विद्यालय घर व समाज में सामंजस्य स्थापित नहीं हो पाता था जबकि बेसिक शिक्षा में इसमें सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास किया गया है जैसे हस्तशिल्प, कताई-बुनाई, श्रम का महत्व आदि कार्य व्यक्ति के परिवार, घर, समाज में सामंजस्य स्थापित करने का अवसर देता था। बेसिक शिक्षा में मातृभाषा आदि के महत्व से व्यक्ति घर, विद्यालय स्कूल, अपने क्षेत्रीय शिल्प समाज में एकत्व महसूस करता था।

निष्कर्ष: यह कहा जा सकता है कि बेसिक शिक्षा योजना को नये रूप में आज भी प्रासंगिक बनाया जा सकता है। क्योंकि इस समय सैद्धांतिक डिग्रियां लेकर एक बेरोजगारों का फौज तैयार हो गया है, यदि हम बेसिक शिक्षा की विशेषताओं को आत्मसात करके श्रम के महत्व को बढ़ाया जाय, कुटीर उद्योग पुनर्जीवित किया जाय, मातृभाषा में शिक्षा दी जाय। आज जो व्यावसायिक शिक्षा की बात की जा रही है वह बेसिक शिक्षा का आधार है। आज नैतिकता का संकट खड़ा हो गया है बेसिक शिक्षा में इसको भी स्थान है। आज यदि बेसिक शिक्षा के अवधारणा को नये परिवेश में लागू किया जाय तो पलायन रुकेगा लोग अपने क्षेत्र में काम करना चाहेंगे। श्रम से घृणा करना छोड़ेंगे तो शहर भी स्वच्छ होगा और लोगों का विकास होगा।